E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

छत्तीसगढ़ में 1920 में बी.एन.सी. मिल का प्रथम मजदूर आंदोलन –ठा. प्यारेलाल सिंह की भूमिका के विशेष संदर्भ में

खेमलता
शोध छात्रा,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

आभा रूपेन्द्र पाल
विभागाध्यक्ष,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

छत्तीसगढ़ में राजनांदगांव प्रथम औद्योगिक नगर कहलाने का गौरव रखता है। इस रियासत के राजा महंत बलरामदास के द्वारा यहां पर एक सूती वस्त्र का कारखाना 23 जून 1890 में की। इसका नाम सेन्ट्रल प्राविंसेस कॉटन था। यह मिल राजा के लिए लाभदायक नहीं था अतः धाटे के चलते सेन्ट्रल प्राविंसेस मिल को सन् 1897 में अँग्रेजी कम्पनी "मेसर्स–शॉ–वालिस" को बेचना पड़ा। बाद में सेन्ट्रल प्राविंसेस मिल का नाम "दी बंगाल–नागपुर कॉटन मिल" रखा गया। बंगाल–नागपुर कॉटन मिल को संक्षिप्त में बी.एन.सी. मिल कहा जाने लगा। बी.एन.सी. मिल के मिल मालिकों के अत्याचारों के कारण मजदूरों में असंतोष की भावना बढ़ती जा रही थी। बी.एन.सी. मिल में शुरूआती दौर में काम की एक पाली चलती थी, लेकिन बाद में शॉवालिस कम्पनी ने दो पाली चलायी। ये पालीयॉ 12–12 घण्टे की होती थी। सन् 1920 में 12 घण्टे की पाली के विरूद्ध ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में एक बड़ा मजदूर आंदोलन हुआ था। इस देश में यह मजदूरों का सबसे लम्बा आंदोलन था, जो कि 37 दिनों तक चला, जिसमें अंततः मजदूरों की जीत हुई।

मुख्य शब्द : मजदूर , मिल ,शोषण , आंदोलन ,राष्ट्रीय चेतना।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में मजदूर आंदोलन ठीक उसी तरह प्रारंभ हुआ जिस प्रकार संसार के अन्य देशों में प्रारंभ हुआ था। राजनांदगांव के बी.एन.सी. मिल में मजदूर संघवाद, जो आवश्यक रूप से उत्पादन की कारखाना प्रणाली और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का फल है, देर से विकसित हुआ। इस देरी के बहुत से कारण थे– औद्योगीकरण की धीमी गति, मजदूरों के अशिक्षित होने से उत्पन्न होने वाली विशेष कठिनाइयां तथा उनका प्रवासी स्वाभाव।

प्रथम विश्व युद्ध के समय देश में जिस प्रकार की स्थितियां उत्पन्न हो रही थी और देश पर रूसी क्रांति तथा उसके बाद सारी दुनियां में उठने वाली क्रांतिकारी लहर का जो प्रभाव पड़ा उनके कारण भारत का मजदूर वर्ग मानो एक छलांग लगाकर कर्म–भूमि में उतर आया। यहीं से भारत में आधुनिक ढंग के मजदूर आंदोलन का श्रीगणेश हुआ।

उस समय देश की आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियां दोनों ने ही मजदूरों में नयी जागृति पैदा करने में मदद की। प्रथम विश्व युद्ध के समय देश में वस्तुओं की कीमतें दुगुनी हो गई लेकिन मजदूरों के वेतन में इस हिसाब से बढ़ोतरी नहीं हुई थी जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी। इसके विपरीत मिल मालिक अंधाधुंध मुनाफा कमा रहे थे। समाज के मध्यम वर्ग ने अपने राजनीतिक संधर्ष एवं स्वार्थ के लिए मजदूरों का इस्तेमाल किया और एक जबरदस्त आंदोलन चलाया गया। यही स्थिति बी.एन.सी. मिल की थी, पहली बार मजदूरों को सुनियोजित ढ़ंग से अपने असंतोष को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला और उन्होंने आंदोलन का रास्ता अपनाकर अपनी मांगों को पूरा करवाया। इस आंदोलन का सफल नेतृत्व करने वाले प्रमुख लोगों में ठाकुर प्यारे लाल सिंह का नाम अमर तो रहा है। उनका संक्षिप्त परिचय जाने बिना यह समझना कठिन होगा कि उन्होंने मजदूर आंदोलन को सफल कैसे बनाया।

साहित्यावलोकन

ठाकुर, श्रीहरि, "त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह", आशीष प्रेस, रायपुर, 1955।

प्रस्तुत पुस्तक में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के प्रारंभिक जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में ठाकुर साहब के राजनीति में पदार्पण और उन्होंने किस प्रकार से मजदूर आंदोलन का नेतृत्व किये है, गरीबों के मसीहा, लोकप्रिय जनप्रतिनीधि, भारत छोड़ो आंदोलन, भूदान आंदोलन, और भूदान का प्रथम बलिदान उसका विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। इस पुस्तक में राजनांदगांव में श्रम संघों के इतिहास का अभाव है।

नगोरी ,एस.एल, "भारत का राष्ट्रीय आंदोलन", आर. बी. एस. पब्लिशर्स , जयपुर , 1983 ।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से लेकर स्वतंत्र भारत के नवीन संविधान के निर्माण तक की ऐतिहासिक घटनाएं और स्वाधीनता आंदोलन, भारतीय इतिहास की जानकारी का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत में साम्यवाद का उदय एवं विकास, भारत में कम्युनिस्ट ग्रुप, कानपुर षड़यंत्र केस, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना, मजदूर–किसान पार्टियों का गठन का संक्षिप्त जानकारी मिलती है।

ठाकुर, विद्याभूषण, "राजनांदगांव जिला एक परिचय", आशीष प्रेस, रायपुर, 1986।

प्रस्तुत पुस्तक में राजनांदगांव की भौगोलिक दशा, वहां की संस्कृति और जन सामान्य के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत पुस्तक में राजनांदगांव के नामकरण पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में बी.एन.सी. मिल व आंदोलन की संक्षिप्त जानकारी मिलती है।

शुक्ला, सुरेशचन्द्र, "छत्तीसगढ़ की रियासतों का विलनीकरण ", शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, रायपुर, 2002।

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ की रियासतों का विलनीकरण का इतिहास, जिसमें छत्तीसगढ़ का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिचय, छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, छत्तीसगढ़ की रियासतों का ऐतिहासिक परिचय, छत्तीसगढ़ की रियासतों में जनजागृति का विस्तृत वर्णन प्रदान करता है। छत्तीसगढ़ की रियासतों में राजनीतिक जागृति,, छत्तीसगढ़ के बी. एन. सी मिल की स्थापना तथा मजदूर आंदोलन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

शुक्ला, सुरेशचन्द्र, अर्चना शुक्ला, "छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास", शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, रायपुर, 2003।

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ की रियासतों में विलनीकरण आंदोलन का इतिहास, छत्तीसगढ़ की रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण व छत्तीसगढ़ के बी.एन.सी मिल की स्थापना सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना तथा मजदूर आंदोलन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में मजदूर संघ के विकास से संबंधित जानकारी का अभाव है।

सिंह, खडगबहादुर, "राजनांदगांव जिले का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1741–स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती तक)," कृष्णा प्रकाशन, राजनांदगांव, 2004।

प्रस्तुत पुस्तक को दस अध्याय में बांटा गया है। प्रस्तुत पुस्तक में राजनांदगांव के अंर्तगत आने वाले जमींदारों की जानकारी, राजनांदगांव का परिचय, राजनांदगांव रियासत में जनजीवन एवं प्रशासन, राजनांदगांव जिले का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, छत्तीसगढ़ में राजनीतिक जागृति,व छत्तीसगढ़ के बी. एन. सी मिल की स्थापना तथा मजदूर आंदोलन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

नैयर, रमेश, "छत्तीसगढ़ के युग पुरूष त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह" शताक्षी प्रकाशन, रायपुर 2006।

प्रस्तुत पुस्तक में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के प्रारंभिक जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में ठाकुर साहब के राजनीति में पदार्पण और उन्होंने किस प्रकार से मजदूर आंदोलन का नेतृत्व किये है, उसका विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। ठाकुर साहब का माधवराव सप्रे से संपर्क, स्वतंत्रता आंदोलन, त्याग और तपस्या, संधर्ष का नया दौर इत्यादि की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। इस पुस्तक में राजनांदगांव में श्रम संघों के विकास से संबंधित जानकारी का अभाव का अभाव है।

वर्मा, भगवान सिंह, "छत्तीसगढ़ का इतिहास (प्रारंभ से 2000 ई. तक)," मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2007।

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ का परिचय, नामकरण, छत्तीसगढ़ में राजनीतिक जागृति, का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। प्रस्तुत पुस्तक में बी.एन.सी. मिल का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, जो कि महत्त्वपूर्ण है तथा विषय से संबंधित है। इसके साथ ही बी. एन. सी मिल की स्थापना तथा मजदूर आंदोलन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

शर्मा, सी. एल. , "छत्तीसगढ़ की रियासतें", मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, 2008।

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ के रियासतों के प्रशासनिक, औद्योगिक क्षेत्र तथा यहां की जनता की जागृति का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में बस्तर, कांकेर, सरगुजा, रायगढ़, जशपुर, कवर्धा, सक्ती, खैरागढ़ व राजनांदगांव रियासतों का वर्णन किया गया है। राजनांदगांव रियासत में राजनांदगांव की भौगोलिक विशिष्टताएं व सीमा का उल्लेख है। इसके अलावा भूगर्भीय संरचना, वनस्पति, वन्य पशु, वर्षा नांदगांव रियासत का इतिहास तथा राजनांदगांव में बी.एन.सी. मिल में हुए मजदूर आंदोलन के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। अतः इस पुस्तक में राजनांदगांव के बी.एस.सी. मिल मालिक व मजदूरों के बीच हुए आंदोलन व शोषण की जानकारी अल्प मात्रा में प्राप्त होती है।

धुप्पड़, श्रीराम, "दुर्ग जिले में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास", छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, 2012।

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ के राजनीतिक इतिहास, छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन, दुर्ग जिले में

राष्ट्रीय जागरण का इतिहास प्रस्तुत करता है। इस पुस्तक में बी.एन.सी. मिल और वहां हुए आंदोलन की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करता है।

शोध का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ के बी.एन.सी. मिल का प्रथम ऐतिहासिक मजदूर आंदोलन –ठाकुर प्यारेलाल सिंह के विशेष संदर्भ में, के विषय को चयन करने का मूल उद्देश्य मजदूरों की परेशानियों, उनमें राजनीतिक और नागरिक अधिकारों की जानकारी तथा ठाकुर साहब के कार्यो का ज्ञान कराना है।

शोध विधि

इस शोध पत्र को प्राथमिक स्त्रोत–समकालीन पत्र, समकालीन समाचार पत्र व समकालीन गजेटियर को लिया गया है। इसके अलावा द्वितीयक स्त्रोत, साहित्यिक अवलोकन के माध्यम से पूरा करने की कोशिश की गई है।

मजदूर आंदोलन के प्रणेता ठाकुर प्यारे लाल सिंह

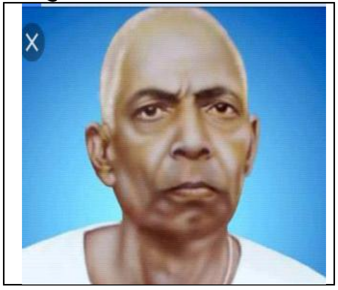

ठाकुर प्यारे लाल सिंह का जन्म 21 दिसम्बर 1891 को राजनांदगांव के ग्राम दैहान में क्षत्रिय कुल में हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर दीनदयाल सिंह और उनकी माता का नाम श्रीमती नर्मदा देवी थी। पिता ठाकुर दीनदयाल सिंह का रहन–सहन काफी शानो–शौकत वाले थे किन्तु वे भी अत्यन्त सरल तथा स्नेही स्वभाव थे। ठाकुर साहब पर उनकी पिता की गहरी छाप पड़ी थी। उनके पिता तात्कालिन कर्वधा, राजनांदगांव व छुईखदान रियासती स्कूलों के उपनिरीक्षक थे।[1]

ठाकुर साहब का बचपन राजनांदगांव और दैहान में व्यतीत हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा राजनांदगांव में हुई तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे 1905 में रायपुर गवर्नमेन्ट हाई स्कूल में भर्ती हो गये। हिस्लाप महाविद्यालय नागपुर से उन्होंने बी.ए.और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त करने में सफल रहे। उन्हें राजनांदगांव के पहले विधि स्नातक होने का गौरव प्राप्त हैं। सन् 1916 में ही ठाकुर साहब ने दुर्ग में वकालत प्रारंभ की इसके पीछे उनका उद्देश्य था वकालत करते हुए स्वतंत्रता पूर्वक जन सेवा करना तथा राजनीति में सक्रिय होकर देश की स्वतंत्रता के लिए जनमत प्रबल करना।[2] 1907 में 16 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह गोमती से हुआ। इनके चार पुत्र और दो पुत्रियां थी।[3]

ठाकुर साहब 15 वर्ष की अवस्था में ही राजनीति में भाग लेना प्रारंभ कर दिये थे। सन् 1906 से उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के अंर्तगत स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग व प्रचार का कार्य प्रारंभ किया। वे इस समय देश की बदलती हुई परिस्थितियों से भली–भांति परिचित हो चुके थे। राष्ट्रीय समस्याओं पर वे युवावस्था से ही मनन करने लगे थे और इसी अवस्था में उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए त्याग और तपस्या का मार्ग अपनाने का संकल्प लिया। राजनांदगांव में ठाकुर साहब, शिवलाल मास्टर और शंकर खरे ने खादी के प्रचार–प्रसार के लिये निरंतर प्रयास किये, तथा इससे स्वदेशी आंदोलन को बल मिला।[4]

20 अप्रैल सन् 1909 ठाकुर साहब ने राजूलाल शर्मा, छबिलाल चौबे, सीताराम जी आदि की मदद से राजनांदगांव में सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की।[5] इस पुस्तकालय की स्थापना का राजनीतिक उद्देश्य– जनता अधिक से अधिक समाचार पत्र, पत्रिकाओं को पढ़कर देश की समस्याओं में रूचि ले। इस प्रकार वे राजनांदगांव के जन–मानस को भावी आंदोलन के लिए तैयार करने में लगे हुए थे तथा जन आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ना चाहते थे।[6]

ठाकुर साहब पहले व्यक्ति थे जिन्होंने राजनांदगांव की जनता तथा मजदूरों में राष्ट्रीय और राजनीतिक चेतना का संचार किया। ठाकुर साहब जब तक राजनांदगांव में रहे तब तक सरस्वती पुस्तकालय राष्ट्रीय गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा। इसी कारण सन् 1928 में इस पुस्तकालय में तात्कालीन शासन ने ताला लगा दिया।[7] सन् 1916 में ठाकुर साहब ने राजनांदगांव के दीवान की अत्याचारी नीति के विरोध में जन आंदोलन का नेतृत्व किया अतः दीवान को हटाया गया। इस घटना के बाद ठाकुर साहब लोकप्रिय हो गये।[8]

ठाकुर साहब राजनांदगांव में वकालत करना चाहते थे लेकिन 1905 में विद्यार्थी आंदोलन की सफलता के कारण राजनांदगांव के दीवान कुतुबुद्दीन उनसे चिढ़े हुए थे, इसीलिए उन्हें नांदगांव में वकालत करने की अनुमति नहीं दी गई। दीवान कहते थे– "प्यारेलाल को राजनांदगांव में रहने देने का अर्थ है दहकते हुए शोले को हथेली पर रखना।"[9] दीवान का डर उचित प्रतीत होता है, ठाकुर साहब ने दुर्ग में वकालत प्रारंभ की। बी.एन.सी. मिल मजदूर आंदोलन के नेता होने के कारण उन्हें राजनांदगांव में रहना आवश्यक था। अतः उन्हें एक उपाय सूझा, उस समय प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था और अंग्रेजी सरकार को पैसे की बड़ी जरूरत थी। ठाकुर साहब ने एक नाटक कम्पनी जो नांदगांव में ठहरी थी से बातचीत कर एक रोज की आमदनी एक हजार रू. अंग्रेज पोलिटिकल एजेन्ट मिस्टर एफ. एल. क्राफर्ड साहब को दिला दिये। रू. पाकर पोलिटिकल एजेन्ट साहब बहुत खुश हुए और उन्होंने ठाकुर साहब को राजनांदगांव में वकालत करने की अनुमति दे दी। ठाकुर साहब पैसों के लिए वकालत नहीं करना चाहते थे, वे वकालत के द्वारा राजनीति में सक्रिय होकर देश की स्वतंत्रता के लिए जनमत को प्रबल करना चाहते थे।[10]

अमृतसर में 1919 में जालियावाला बाग हत्याकाण्ड के बाद देश में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आंदोलन उग्र होने लगा था, परिणामस्वरूप कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू करने का फैसला किया। सारा देश गांधी जी के आवाहन पर इस आंदोलन में भाग लिये और हर तबके के लोग कंधे से कंधे मिलाकर इस आंदोलन में गांधी जी को सहयोग प्रदान किया। इसका प्रभाव देशी रियासतों पर भी पड़ा। 26 दिसम्बर 1920 को नागपुर में विजयरावाचार्य की

अध्यक्षता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। जिसमें महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन को पारित किया गया। इस अधिवेशन में ठाकुर साहब ने भाग लिया। इस अधिवेशन में सात कार्यक्रम तय किये गये थे वे इस प्रकार थे–1. सरकारी उपाधियों का त्याग, 2. सरकारी लगान का भुगतान न करना, 3. अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, 4.स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, 5. वकीलों द्वारा वकालत का त्याग, 6. कौंसिलों का बहिष्कार, 7. मद्य निषेध का प्रचार।[11]

उपरोक्त कारणों के परिणामस्वरूप ठाकुर प्यारे लाल सिंह ने चार वर्षों के लिए वकालत छोड़ दी। जनता के मध्य धूम–धूम कर उन्होंने असहयोग आंदोलन की ज्वाला फैला दी। 1924 में जब असहयोग आंदोलन स्थगित हुआ, उसके बाद ठाकुर साहब ने पुनः वकालत का कार्य प्रारंभ की।[12]

राजनांदगांव छत्तीसगढ़ का छोटा सा शहर है, किन्तु राजनीतिक चेतना के दृष्टिकोण से सदैव अग्रणी रहा है। मजदूरों में दिन–प्रतिदिन असंतोष बढ़ता जा रहा था। परिणामस्वरूप ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने मजदूरों तथा महिला मजदूरों को जागृत और संगठित करने का काम आरंभ किया।[13]

मजदूरों में राजनीतिक तौर पर सन् 1919 में पहली बार चेतना जाग्रत हुई जब रौलेट एक्ट के विरोध में राजनांदगांव शहर तथा मिल बंद रहा। पुनः बालगंगाधर तिलक की मृत्यु पर बंगाल–नागपुर–कॉटन मिल के मजदूरों ने दो दिन काम बंद रखा।[14] नवम्बर 1917 से ठाकुर प्यारेलाल सिंह मजदूर आंदोलन से जुड़ गये थे। इसी वर्ष ठाकुर साहब की मुलाकात कुछ मिल मजदूर से हुई। अपने स्वाभाव के अनुसार मजदूरों से हालचाल पूछा तब मजदूरों ने अपने साथ हो रहे अत्याचारों व शोषण के बारे में बताया कि उनकों 12 घण्टे रोजाना काम करवाने के बाद भी सही मयाने में पर्याप्त मजदूरी नही मिलने की बात कही। मजदूरों की परेशानियों को सुनकर ठाकुर साहब मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो गये।[15]

ठाकुर साहब किलापारा में रहते थे और कसेरपारा में उनका ऑफिस था। उनके अथक प्रयासों से एक संगठन तैयार हो गया था और यह सब कार्य गुप्त रूप से किया गया। अधिकारियों को मजदूर संगठन के बारें में उस समय पता चला जब 1920 में ठाकुर साहब ने आंदोलन प्रारंभ की।

मजदूर आंदोलन के कारण

जिस स्थान पर भी कारखाने स्थापित होते है, वहां श्रम से संबंधित समस्याएं स्वमेव उत्पन्न हो जाती है। ब्रिटेन की औद्योगीक क्रांति ने भारत को अनेक फायदे पहुंचाये थे, परन्तु इससे नुकसान भी हुआ था। यह नुकसान थी, कि इसने मजदूरों की दीन दशा को और अधिक शोचनीय बना दिया। बी. एन. सी. मिल का संचालन अंग्रेज कम्पनी के हाथों में आने के बाद इसमें तरक्की होने लगी लेकिन असहाय मजदूर मिल–मालिक की इच्छानुसार कार्य करने को मजबूर थे। इस दशा में मजदूरों में असंतोष की भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

बी. एन. सी. मिल के मजदूरों से काम अधिक लिया जाता था। यहां तक मजदूरों को 12 से 13 घण्टे काम करना पड़ता था और उन्हें कम मजदूरी देते थे। महिलाओं की स्थिति और भी अधिक गंभीर थी। उनसे 9 घण्टे या कभी–कभी 11–12 घण्टे काम लिया जाता था, इनमें से कुछ गर्भवती थी और कई महिलाएं दुध पीते बच्चों की माँ थी।[16]

मजदूरों की वेतन–भत्ते मिल–मालिकों की इच्छा पर निर्भर करता था। मजदूरों को वेतन इतना कम मिलता था कि उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो पाती थी। बी. एन. सी. मिल के मजदूरों का मूल वेतन 7 रू. था, लेकिन मजदूरों को गेट में ही 1 रू. दे दिया जाता था। उस समय रूपया शुद्ध चांदी का होता था।[17] बी. एन. सी. मिल के मजदूरों के द्वारा यह शिकायत मिलती थी कि उनका वेतन पूरा नहीं दिया गया। प्रत्येक पाली के अधिकांश मजदूरों को काम न होने का बहाना कर घर भेज दिया जाता था और इस स्थिति में उन्हें मुआवजा भी नहीं देते थे। जिससे मजदूर बेकार हो गये और उन्हें दो वक्त का भोजन मिलना कठिन हो गया।[18]

कपड़ा मिलों में भारी शोरगुल होता था, जिससे बहरा होने की संभावना अधिक थी। कारखानें में शटल की तेज आवजें और मशानों की गड़गड़ाहटे बहरा बनाने के लिए काफी जिम्मेदार है। मजदूरों ने इस समस्या के समाधन हेतु मांग की गई, लेकिन कोई सुधार नहीं किया गया इस प्रकार ब्रिटिश अधिकारी मजदुरों की मांगों को ध्यान नहीं दिया।[19]

बी. एन. सी. मिल के मजदूरों पर काम का भार लगातार बढ़ाया गया था। तेज गति से चलने वाली मशीनों के कारण यह भार और अधिक बढ़ा गया साथ ही बहुत सारे मजदूरों को यह कहकर निकाल दिया कि जरूरत से ज्यादा मजदूर रखे गये है। इससे मजदूरों की अवकाश में कटौती हो गयी।[20]

भारत में कपड़ा मिलों को आज भी "पसीने की दुकान" माना जाता है। अत्यधिक गर्मी और नमी के कारण न केवल काम करने की क्षमता कम होती थी, बल्कि बीमारियां भी फैलती थी। रूई के रेशे फेफड़ो के अन्दर जाकर टी. बी. और बिसिनियोसिस नामक बीमारी पैदा करती है। रंगखाने में मिट्टी के तेल से निकलने वाली गैस से लोग त्रस्त रहते थे। मच्छरदानी के खाते में ग्रेफाईट के उपयोग से मुंह, गले में खुजलाहट रहती थी। कपड़ा मिल में उड़ने वाली रूई से श्वास संबंधित परेशानियां होती थी।[21]

इस समय बी. एन. सी. मिल के अंग्रेज मैनेजर द्वारा मजदूरों को दिनों–दिन तानाशाही व तंग करने का प्रयास किया जा रहा था। मजदूरों को अवकाश नहीं मिलता था। एक दिन भी काम में न जाने पर गैरहाजिरी लगाई जाती थी और दो दिन का पैसा जब्त कर लिया जाता था।

बीमार मजदूरों के लिए मिल प्रबंधक का सक्त आदेश था कि दो दिन पहले ही दरखास्त देकर छुट्टी स्वीकृत कराना चाहिए नहीं तो काम से निकाल दिया

जायेगा। प्रबंधक द्वारा मजदूरों से मनमाने ढंग से जुर्माना भी लिया जाता था।[22] इसके अलावा मजदूरों को मारने की धमकी दी जाती थी। मिल मैनेजर मजदूरों के पेट को काटकर अपना पेट भरना चाहता था। मैनेजर का इतना आतंक था कि वह किसी भी मजदूर को किसी भी क्षण निकाल सकता था। इस बात का प्रमाण सन् 1926 में 150 मजदूरों को मिल मैनेजर ने इसलिए निकाला कि ये लोग उनके व्यवहार से रूष्ट थे। यदि मजदूर मैनेजर के इस तानाशाह का विरोध करते तो प्रबंधक उन्हें गुण्ड़ों से पिटवाया जाता था।[23]

इस समय भारत में कपड़ा मिलों में हादसों का सिलसिला बढ़ता जा रहा था। बी. एन. सी. मिल में कृ त्रिम तरीके से नमी पैदा की जाती थी, ताकि धागा न टूटे। मजदूरों द्वारा हमेशा तापमान अधिक होने की शिकायत की जाती थी। अत्यधिक गर्मी के कारण श्रमिकों की कार्य क्षमता कम हो जाता थी और कभी–कभी बेहोश होकर गिर जाते थे। रंगखानें में पोलिमिराई जिंग मशीन के फटने से मजदूरों की मारे जाने की संभावना अधिक हो जाती थी। सुरक्षा के दृष्टिकोण से मजदूरों को जूता तक नहीं दिया जाता था। धागा खत्म होने पर शटल से छिटककर बाहर आ जाता था, जिससे मजदूरों की आंखे व शरीर में घुस जाने की प्रबल संभावना होती थी।[24]

राजनांदगांव छोटा सी रियासत थी, तथा देशी राज्य होने के कारण यहां के कारखानों में फैक्टरी एक्ट लागू नहीं हो सकता था, क्योंकि रियासत के राजा अभी नाबालिग था। रियासत का प्रबंध पोलिटिकल एजेन्ट के अधीन एक सुपरीटेन्डेन्ट के हाथ में था। सुपरीटेन्डेन्ट हिन्दुस्तानी था, मिल के मालिक और प्रबंधक दोनों अंग्रेज थे। अतः सुपरीटेन्डेन्ट का कोई भी दबाव इन दोनों पर नहीं पड़ सकता था। जिसके कारण राज्य का प्रबंध पोलिटिकल एजेण्ट के अधीन था। [25]

आंदोलन की घटनाएं

छत्तीसगढ़ में मजदूर आंदोलन का बीजारोपण राजनांदगांव के बी. एन. सी. मिल के मजदूरों ने किया। अप्रैल 1920 में ठाकुर प्यारे लाल सिंह के नेतृत्व में राजनांदगांव के बी. एन. सी. मिल के मजदूरों ने देश के इतिहास में सबसे पहली और लंबी हड़ताल आरंभ की। ठाकुर साहब उस समय मजदूरों के अध्यक्ष थे, शिवलाल जी उपाध्यक्ष थे और राजूलाल शर्मा मंत्री थे। मजदूरों की प्रमुख मांगे निम्नलिखित थी :–

1. वेतन में वृद्धि की जाये।
2. काम करने की स्थिति में सुधार की जाये।
3. कार्य की अवधि आठ घण्टे निर्धारित की जाये।[26]

21 फरवरी 1920 में 2000 मजदूरों ने हड़ताल कर दी। हड़तालियों को संबोधित करने के लिए नागपुर से नारायण राव वैद्य, देव महाशय तथा राजिम से पं. सुन्दालाल शर्मा भी राजनांदगांव पधारे थे। स्टेशन पर हड़तालियों ने इनकी बड़ी घूमघाम से इनका स्वागत किया था। दूसरे दिन नगर में जुलूस निकाला गया। जुलूस के समय मजदूरों ने नारा लगाया हमारा शोषण बंद करों, काम के घण्टे कम करो, हमारा वेतन पूरा दो, आदि।[27]

इस प्रकार के जुलूस को सुपरिटेण्डेन्ट साहब ने अनुचित घोषित किया। इसके पहले पुलिस इन्सपेक्टर साहब ने अपना हुक्म सुना दिया था कि बिना आज्ञा के सार्वजनिक सभा न होने दी जायेगी, तद्नुसार पं. सुन्दालाल शर्मा, राजूलाल शर्मा आदि ने इजाजत लेने के लिए सुपरिटेण्डेन्ट साहब से मुलाकात की। सुपरिटेण्डेन्ट साहब आदेशानुसार अपने–अपने घर पर 50–60 आदमी मिलकर सभा करने की अनुमति प्रदान की गई। परिणामस्वरूप राजूलाल शर्मा के मकान के पीछे ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने व्याख्यान दिया।[28]

हड़ताल को खत्म करने के लिए पुलिस इन्सपेक्टर मजदूरों को डरा, धमका रहे थे। पोलिटिकल एजेंट मजदूरों को जबरदस्ती काम पर भेजने का प्रयास कर रहे थे। यह हड़ताल 37 दिनों तक ठाकुर साहब के नेतृत्व में सफलतापूर्वक चली। 38 वे दिन मिल अधिकारियों ने मजदूरों की सभी मांगे स्वीकार कर ली। कार्य के घण्टे कम किये गये, मजदूरी की दर बढ़ाई गई। मजदूरों की दशा सुधरी व उनको सही दिशा मिली।[29]

राजनैतिक दृष्टि से यह हड़ताल महत्वपूर्ण थी क्योंकि उस समय विदेशी शासन का पूरे देश में बोल–बाला था और देशी नरेश ब्रिटिश राज भक्त थे। वहां संगठन करने तथा बोलने की स्वतंत्रता नहीं थी। राजनांदगांव के मिल का अंग्रेज प्रबंधक छत्तीसगढ़ रियासतों के लिए बेताज बादशाह बन गया था, क्योंकि काले लोगों के राज्य में गोरा पोलिटिकल एजेंट होता था। इन परिस्थिति के बावजूद सफलता प्राप्त करना आर्श्चजनक बात थी। इस हड़ताल ने मजदूरों में एक नया जोश, नई चेतना का संचार किया। ठाकुर साहब की ख्याति सारी रियासत में फैल गई। ठाकुर साहब एक मात्र मजदूरों के नेता बन गये।[30]

ठाकुर साहब को मिल अधिकारी बाधा समझने लगे, क्योंकि इस मजदूर आंदोलन की सफलता ने राष्ट्रीय आंदोलन को प्रोत्साहन दिया था, क्योंकि इससे पूर्व ठाकुर साहब ने स्वदेशी आंदोलन में भाग लिये और इस आंदोलन का प्रचार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि मजदूर संघ के शिवलाल जी, मंत्री राजूलाल जी तथा ठाकुर प्यारेलाल सिंह को रियासत सुपरिटेन्डेन्ट के हस्ताक्षरों से एक नोटिस मिला था कि उक्त तीनों व्यक्ति 11 मार्च को दस बजे रायपुर में पोलिटिकल एजेंट साहब के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर कारण बतलावे कि हड़ताल में उन्होंने क्यों भाग लिया। अन्यथा उन्हें राजनांदगांव से निकाल दिया जायेगा। जिस बात का डर था वही हुआ। रायपुर के पोलिटिकल एजेंट मि. क्राफर्ड ने मजदूर प्रतिनिधि राजूलाल, शिवलाल तथा ठाकुर प्यारेलाल सिंह को 13 तारीख को प्रातः काल 7 बजे तक राजनांदगांव से निकलने का सक्त हुक्म दिया था। उसके अनुसार 12 तारीख को ही उन लोगों ने यह रियासत छोड़ दी।[31]

इस निष्काशन के बारे में ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने म.प्र. के गर्वनर–जनरल को एक पत्र लिखा व स्पष्ट रूप से घोषणा की – मैं नहीं जानता कि प्रशासन से संबंधित आपके विचार क्या है किन्तु मेरे विचार में प्रशासन जनता की उन्नति, सुरक्षा और कल्याण के लिए होता है

अगर इन उद्देश्यों की पूर्ति में शासन अक्षम सिद्ध होता है तो उसे संशोधित किया जाता या समाप्त कर दिया समाप्त कर दिया जाता है।[32]

राजनांदगांव रियासत के प्रशासन के संबंध में मेरा अनुभव यह है कि यहां के दरबारी लोग सारा धन, भोग विलास में नष्ट कर रहे हैं और रियासत लाखों के ऋण में डूब चुकी है। अगर कोई व्यक्ति इस अत्याचार के विरोध में आवाज उठाता है तो पुलिस द्वारा उसे सजा दिया जाता है। और उस व्यक्ति का नाम रियासत की काली पुस्तक में दर्ज कर दिया जाता है। उसे रियासत छोड़कर बाहर चले जाने के लिए आदेश दिया जाता है। रियासती अधिकारियों के द्वारा ऐसे व्यक्तियों पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाता हैं। वे किसी से बातचीत नही कर सकते किसी के साथ बैठ नहीं सकते। अपनी बातों को समाचार पत्रों या भाषणों द्वारा भी प्रगट नहीं कर सकते। पुलिस का आतंक तथा दरबारियों का अन्याय पूर्ण व्यवहारों के कारण यहां की जनता उस स्वतंत्र वातावरण में नहीं जी पाती जो उसे पहले प्राप्त था। सामान्य जनता के लिए किये जाने वाले कल्याणकारी कार्य भी अब बुरी तरह प्रभावित और उपेक्षित हो रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जनता का नैतिक मनोबल भी अब गिरता जा रहा है।[33]

आपको जानकारी होगा कि रियासत तथा मिल मैनेजर के शोषण और दमनकारी नीतियों से असंतुष्ट होकर यहां के पांच–छह हजार मिल मजदूरों ने अभी 37 दिन तक हडताल की थी। उनकी न्यायोचित मांगों के समक्ष यहां के प्रशासन को झुकना पड़ा और उन्हें मजदूरों को उचित सुविधाएं देने के लिए बाध्य होना पड़ा किन्तु उसके फलस्वरूप हम तीन लोगों (शिवलाल जी, राजूलाल जी तथा ठाकुर प्यारेलाल सिंह) को बिना कोई अरापराध रियासत की सीमा छोड़कर चले जाने का आदेश दिया है। राजनांदगांव हमारी मातृभूमि है और जहां मैने जन्म लिया है उस भूमि पर रहने का मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। शासन को उनसे नागरिक अधिकार छीनने का कोई अधिकार नहीं है।[34]

इस निष्काशन आदेश की खबर नागपुर पहंची उस समय वहां प्रांतीय व्यवस्थापक कौंसिल की बैठक हो रही थी। उसमें उपस्थित समस्त प्रतिनिधियों ने अपने हस्ताक्षर से रियासत से निकालने की आज्ञा दद्द करने के लिए चीफ कमीश्नर साहब के पास प्रार्थना पत्र भेजा। अन्ततः तात्कालीन गर्वनर सर फ्रेंकस्लाई ने राजनांदगांव रियासत के पोलिटिकल एजेंट मि. एफ. एल. क्राफर्ड को इस आदेश को रद्द करने के लिए कहा एवं उन्हें ठाकुर प्यारेलाल सिंह से माफी भी मांगनी पड़ी। मांगे पूरी हो जाने पर अपने नेताओं के आदेशानुसार मजदूरों ने 6 अप्रैल 1920 को काम करना पुनः शुरू कर दिया था।[35]

इस आंदोलन के सफलता के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि इसमें योग्य और अनुभवी नेताओं ने भाग लिया। उनका उद्देश्य मजदूरों की समस्याओं का समाधान करना था। इस आंदोलन के नेतृत्व करने वाले प्रमुख नेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह, पं. राजूलाल शर्मा, राघोलालजी, डॉ. बंशीलाल, चुनीलाल नंदलाल सिंह, सीताराम साव के विचारों में समानता थी। इस आंदोलन के प्रणेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह, बड़े दूरदर्शी थे, उनका एक निश्चित उद्देश्य मजदूरों के लिए काम के घण्टे निर्धारित करना व उनके वेतन में वृद्धि करना था। उपरोक्त घटना से ठाकुर साहब के प्रति जनता और मजदूरों की श्रद्धा, विश्वास और प्रबल हो गया।

निष्कर्ष

राजनांदगांव रियासत के बी.एन.सी. मिल में मिल–मालिकों ने मजदूरों के विरूद्ध शोषण की प्रक्रिया को अपनाया, जिसका मुँह तोड़ जवाब मजदूरों ने आंदोलन करके दिया। इस सम्पूर्ण धटना चक्र में ठाकुर प्यारेलाल सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण रही। यह आंदोलन धीरे–धीरे इतना विस्तृत हुआ, कि छत्तीसगढ़ के मजदूर आंदोलनों इतिहास में "मील का पत्थर" साबित हुआ।

इस आंदोलन के सफलता के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि इसमें योग्य और अनुभवी नेताओं ने भाग लिया। उनका उद्देश्य मजदूरों की समस्याओं का समाधान करना था। इस आंदोलन के नेतृत्व करने वाले प्रमुख नेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह, पं. राजूलाल शर्मा, राघोलालजी, डॉ. बंशीलाल, चुन्नीलाल नंदलाल सिंह, सीताराम साव के विचारों में भिन्नता नहीं थी। इस आंदोलन के प्रणेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह, बड़े दूरदर्शी थे, उनका एक निश्चित उद्देश्य मजदूरों के लिए काम के घण्टे निर्धारित करना व उनके वेतन में वृद्धि करना था। उपरोक्त घटना से ठाकुर साहब के प्रति जनता और मजदूरों की श्रद्धा, विश्वास और प्रबल हो गया। छत्तीसगढ़ के रियासत में होने वाले मजदूर आंदोलन का राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर पर अपना विशिष्ट महत्व हैं। मजदूर मिल–मालिकों के विरूद्ध अपने अधिकारों की लड़ाई लड़कर अपनी जागरूकता परिचय दिया।

अंत टिप्पणी

1. *ठाकुर, श्रीहरि, "त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह", आशीष प्रेस, रायपुर, 1955, पृ. 2–3।*
2. *छत्तीसगढ़ संदेश, 13–8–1947, अंक 25, पृ. 13 ।*
3. *उपरोक्त।*
4. *वर्मा, भगवान सिंह, "छत्तीसगढ़ का इतिहास (प्रारंभ से 2000 ई. तक)," मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2007, पृ. 66।*
5. *एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट ऑफ सी.पी. एंड बरार फॉर द इयर्स 1882, पृ. 87–97।*
6. *"छत्तीसगढ़ संदेश, पूर्वोक्त।*
7. *उपरोक्त।*
8. *ठाकुर, श्रीहरि, पूर्वोक्त, पृ. 8–9।*
9. *नांदगांव संदेश, दिनांक 1–9–1946, अंक 26, पृ. 12।*
10. *छत्तीसगढ़ संदेश, पूर्वोक्त।*
11. *नगोरी ,एस.एल, "भारत का राष्ट्रीय आंदोलन", आर. बी. एस. पब्लिशर्स , जयपुर , 1983, पृ. 221।*
12. *मध्यप्रदेश संदेश, शुक्ल, संतोष कुमार , स्वाधीनता रजत जयंतिका विशेषांक (स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ का योगदान), पृ. 53।*

13. झा, प्रफुल्ल, "राजनीतिक चेतना का अंकुरण स्थल– बी. एन. सी. मिल्स", बलराम प्रेस राजनांदगांव, 1973, पृ. 12।
14. बेहार , रामकुमार, " छत्तीसगढ़ी संस्कृति और विभूतियां ", छत्तीसगढ शोध संस्थान 370 सुन्दर नगर रायपुर , 2003, पृ. 59।
15. कर्मवीर, शनिवार चैत्र कृष्ण, सं. 76, तारीख 20 मार्च 1920,पृ. 5,(माधवराव सप्रे संग्रहालय भोपाल)।
16. सायल, राजेन्द्र कुमार, "राजनांदगांव में श्वेत आतंक", मजदूर संघ को कुचलने के लिए राज्यतंत्र द्वारा संगठित हिंसा पर एक अधूरी रिर्पोट, क्षेत्रीय सचिव लोक स्वतंत्रता संगठन म.प्र.,खण्ड–2, दिनांक 2–10–1984, रायपुर, पृ. 20।
17. कर्मवीर, शनिवार फाल्गुन शुक्ल 9, सं. 76, तारीख 28 फरवरी 1920, (माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता संस्थान भोपाल), पृ. 3 ।
18. "राजनांदगांव रियासत के उद्योगों की समस्याएं," राजगामी संपदा से प्राप्त, 1909 से 1936 ई.तक।
19. कर्मवीर, शनिवार, फाल्गुन शुक्ल 9, सं. 76, तारीख 28 फरवरी 1920, पूर्वोक्त।
20. सायल, राजेन्द्र कुमार, "राजनांदगांव में श्वेत आतंक", पूर्वोक्त।
21. कर्मवीर, शनिवार, फाल्गुन शुक्ल 9, सं. 76, तारीख 28 फरवरी 1920, पूर्वोक्त।
22. श्रीवास्तव, धानुलाल, "अष्टराज अम्भोज", रेजा प्रेस नरसिंहपुर मध्यप्रदेश, 1925, पृ. 68।
23. झा, प्रफुल्ल, "राजनीतिक चेतना का अंकुरण स्थल– बी. एन. सी. मिल्स", पूर्वोक्त, पृ. 25।
24. कर्मवीर, शनिवार, फाल्गुन शुक्ल 9, सं. 76, तारीख 28 फरवरी 1920, पूर्वोक्त।
25. संकल्प, शनिवार, अंक 42,तारीख 10 सितम्बर 1921, नागपुर शहर से प्रकाशित, पृ. 5।
26. कर्मवीर, शनिवार द्वितीय श्रावण शुक्ल , सं. 32, तारीख 20 अगस्त 1920।
27. ठाकुर, श्रीहरि, "त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह" पूर्वोक्त, पृ. 13।
28. शुक्ला, सुरेशचन्द्र, "छत्तीसगढ़ की रियासतों का विलनीकरण ", शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, रायपुर, 2003, पृ. 76।
29. सिंह, खड़गबहादूर, "राजनांदगांव जिले का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1741 से स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती तक) ", कृष्णा प्रकाशन राजनांदगांव, 2004, पृ. 18।
30. शुक्ला, सुरेशचन्द्र, अर्चना शुक्ला, "छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास", शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, रायपुर, 2003, 180।
31. वर्मा, भगवान सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 76।
32. बी. एन. सी. मिल के मजदूर आंदोलन 1920 के संबंध में ठाकुर प्यारेलाल सिंह द्वारा मध्यप्रदेश गर्वनर जनरल सर फ्रेंकस्लाई को लिखा पत्र, पृ. 1–2(सरस्वती पुस्कालय से प्राप्त)।
33. उपरोक्त।
34. उपरोक्त।
35. नैयर, रमेश, "छत्तीसगढ़ के युग पुरूष त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह", शताक्षी प्रकाशन रायपुर, 2006, पृ. 20।